千代尼

芭蕉

芭蕉

芭蕉

也有

芭蕉

芭蕉

芭蕉

芭蕉

芭蕉

आपके जापानी हाइकू

एकलव्य का प्रकाशन

आपके जापानी हाइकू

संचयन और अँग्रेज़ी से अनुवाद : तेजी ग्रोवर
चित्रांकन : रानू टाइटस

एकलव्य का प्रकाशन

आपके जापानी हाइकू

AAPKE JAPANI HAIKU

संचयन और अँग्रेज़ी से अनुवाद : तेजी ग्रोवर

चित्रांकन : रानू टाइटस

इस किताब में हमने अनुवादक के विशेष आग्रह पर वर्तनी सम्बन्धी हमारे मानकों को बदला है।

प्रथम संस्करण : जून 2006 / 2000 प्रतियाँ
80 gsm मेपलिथो नेचुरल शेड व 170 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित।
सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।
ISBN : 81-87171-79-0
मूल्य : 12.00 रुपए

प्रकाशक : **एकलव्य**
ई-7/453 एचआईजी, अरेरा कॉलोनी
भोपाल 462 016 (म.प्र.)
फोन : 0755 - 246 3380, फैक्स : 0755 - 246 1703
ई मेल : info@eklavya.in
सम्पादकीय : books@eklavya.in

मुद्रक : श्रेया ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन : 0755 - 427 5001

हाइकू...

ये हाइकू जापान देश की जानी-मानी कविताएँ हैं। जापानी भाषा में शायद दुनिया की सबसे नन्हीं कविताएँ। इनमें से कुछ कई सौ साल पहले लिखी गयी थीं और कुछ सौ-एक साल पहले। हमने हर हाइकू के कई अँग्रेज़ी अनुवाद देखकर ये हाइकू आपके लिए हिन्दी में लाने की कोशिश की है। आप इस किताब में कुछ जापानी कवियों के नाम जापानी लिपि में देख सकते हैं। बाकी कवियों के नाम हम जापानी लिपि में नहीं जुटा पाए। इन्हें देखकर आप समझ जाएँगे कि यह "चित्रलिपि" देखने में कितनी सुन्दर है। हमारी अपनी भाषाओं की लिपियाँ भी उन लोगों को बहुत सुन्दर लगती हैं जो उन्हें पढ़ नहीं सकते।

लेकिन ये हाइकू होते क्या हैं, इनमें ख़ास बात क्या है? हम यहाँ ऐसी बहुत-सी बातों में से कुछ पर ही विचार करेंगे। प्रकृति के किसी सुन्दर दृश्य को देखकर जो भाव मन में पैदा होता है, उसे आप क्या कहेंगे? मन-ही-मन एक "वाह" – एक ऐसा सुख जो आपको रुला तक सकता है। आप साँझ के बादलों और घर जाते पक्षियों को नमस्कार करते हैं। और एक ही साँस में आप कोई हाइकू कह देते हैं। जापानी भाषा ही ऐसी है कि यह हाइकू जैसी साँस उसमें आपको सुनायी पड़ती है।

लेकिन जैसे आप "योग" में साँस लेने और छोड़ने के नियम का पालन करते हैं, वैसे हाइकू में भी। जापानी हाइकू में केवल तीन से दस शब्द होते हैं। अगर तीन खड़ी पंक्तियों में लिखें, ऊपर से नीचे की ओर, तो पहली पंक्ति में पाँच स्वर, दूसरी में सात, और तीसरी में फिर पाँच स्वर। यानी व्यंजन जितने भी हों स्वर कुल मिलाकर केवल सत्रह रहेंगे। दीर्घ स्वर को दो स्वर माना जाएगा। "मीठी" शब्द में चार स्वर गिने जाएँगे।

लेकिन सत्रह स्वर वाले इस नियम का पालन अन्य भाषाओं में करना कठिन है - यानी जापानी भाषा में "टेलिग्राम" या "तार" की शैली अधिक सहज है।

लेकिन हम हर नन्हीं जापानी कविता को हाइकू नहीं कह सकते। हाइकू के कुछ और भी प्यारे नियम होते हैं। घटना या दृश्य केवल एक होता है, और यह दृश्य अभी-अभी का होता है। एक और ख़ास बात यह है कि हाइकू में मौसम का संकेत अक्सर रहता है। मौसम का संकेत देने वाले शब्द को "किगो" कहते हैं। जैसे बादल जापान में गर्मी के मौसम का संकेत है और आलूचे के फूल नए वर्ष के पहले फूल होते हैं। तो "बादल" और "आलूचा" जापानी हाइकू में "किगो" कहलाएँगे।

हाइकू जापानी कविता की उस परम्परा से आये हैं जिसमें कविता कई लोगों के काम को जोड़-जोड़कर बनती थी। जापानी में कविता के लिए शब्द भी ऐसा है – जुड़े हुए अंश। हाइकू की परम्परा में कविता सबका जी खुश करने के लिए लिखी जाती थी और मनुष्य को प्रकृति का अंग मानकर चलती थी। जापान के मशहूर कवि बाशो कहा करते थे —

चीड़ के पेड़ के बारे में चीड़ से सीखो,
सरकण्डों के बारे में सरकण्डों से।

और हम शायद यह भी कह सकते हैं कि हाइकू के बारे में हाइकू से सीखो... वे ओस-भीगे पैरों वाली चिड़िया की तरह आपके आँगन में कुछ लिख रहे हैं।

- तेजी ग्रोवर

子規 शि कि

उफ़्! मैं सब खा गया
और उफ़्! पेट का यह दर्द...
चोरी के हरे सेब।

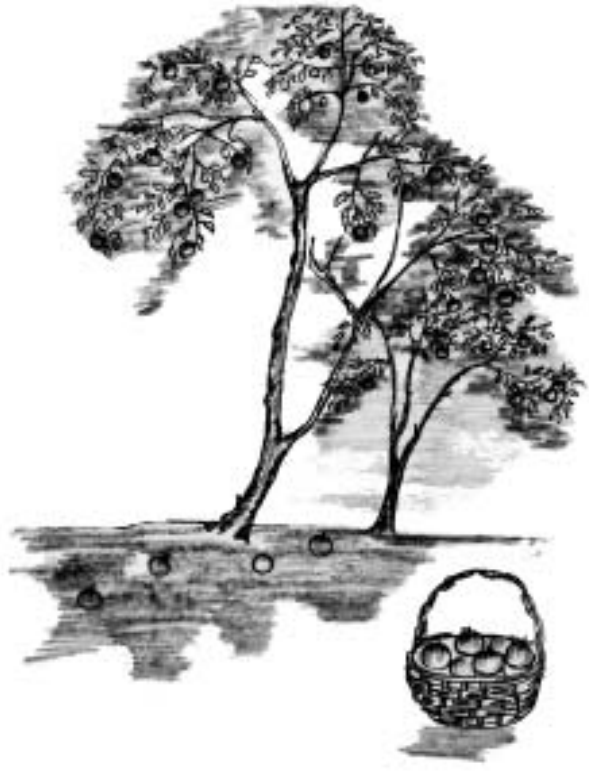

立 रयू
圃 हो

मैंने चन्द्रमा को उठाया
अपनी पानी की बालटी में
और उसे घास पर उड़ेल दिया।

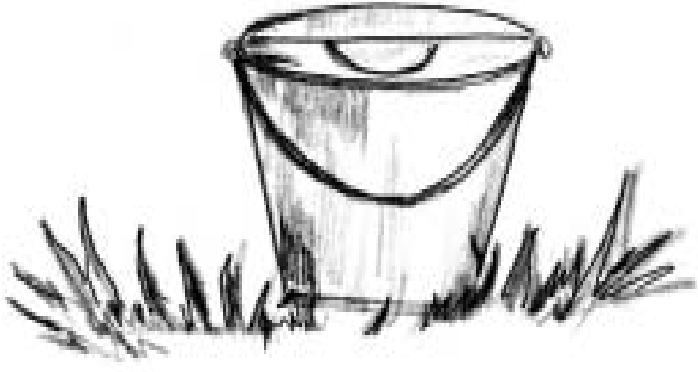

鬼貫

ओनित्सुरा

मैं कहता हूँ
“आओ! आओ!” और जुगनू
उड़े चले जाते हैं!

शिसएइ-जो

सर्दी की तूफ़ानी बारिश...
और मेरी मूरख छतरी
उलटा चलने लगी।

守武

मोरिताके

अब नहीं मिलेंगे मित्र
खो गए हैं जंगल के पक्षी
बादलों में उड़ते हुए।

子規 शि कि

क्या शानदार दिन है
पूरे गाँव में कोई भी
कुछ नहीं कर रहा।

守武

मोरिताके

झरा हुआ फूल
वापिस टहनी पर... अरे नहीं!
यह तो सफ़ेद तितली है।

शुसएन्

प्यारी तितलियो,
चीड़ की सुइयों से बचना
इस तेज़ हवा में।

越人

एत्सुजिन्

सिर्फ़ एक चहकते
कीड़े ने मुझे बताया कि रात है,
इतना चमक रहा था चाँद।

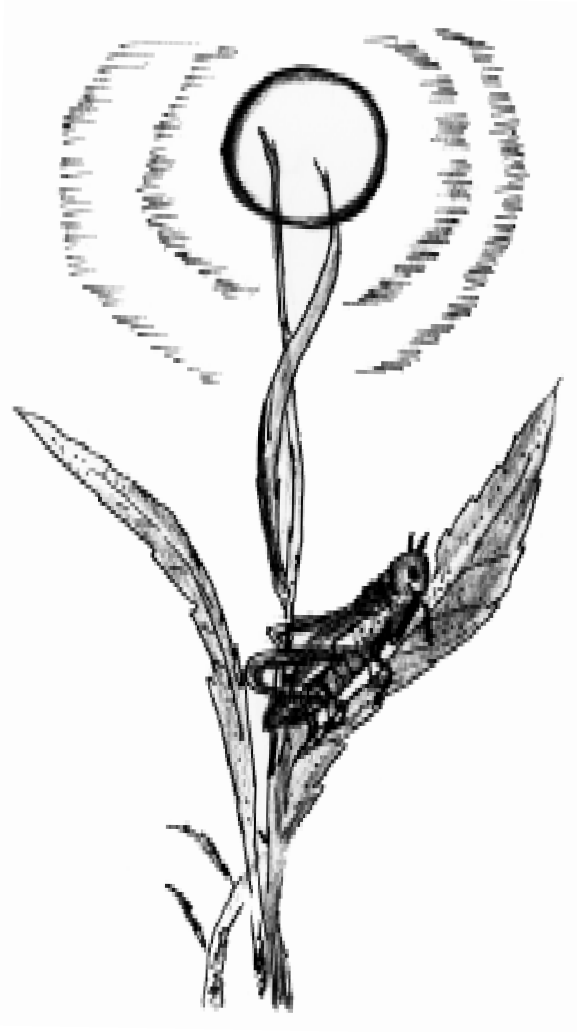

子規 शि कि

पत्तों से खाली है
यह अँधेरा पेड़...
लेकिन सितारे हज़ार हैं।

子規 शि कि

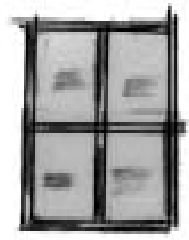

फिर आयी हो, गौरइया
मेरे साफ़-सुथरे आँगन में
अपने ओस-भरे पैरों से लिखने!

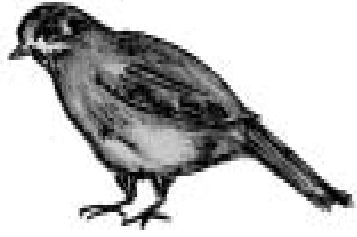

一
茶 इस्सा

चल यार, मुझसे खेल
माँ-बाप से छूटे
गौरइया के नन्हे बच्चे।

蕪村 बुसोन्

एक बूँद बारिश
पड़ी, और घोंघा
बन्द हो गया।

千代尼

चियो-नि

तेज़ हवाओं के किस
देश में भटक रहे हो,
मेरे नन्हे शिकारी चिउरे?

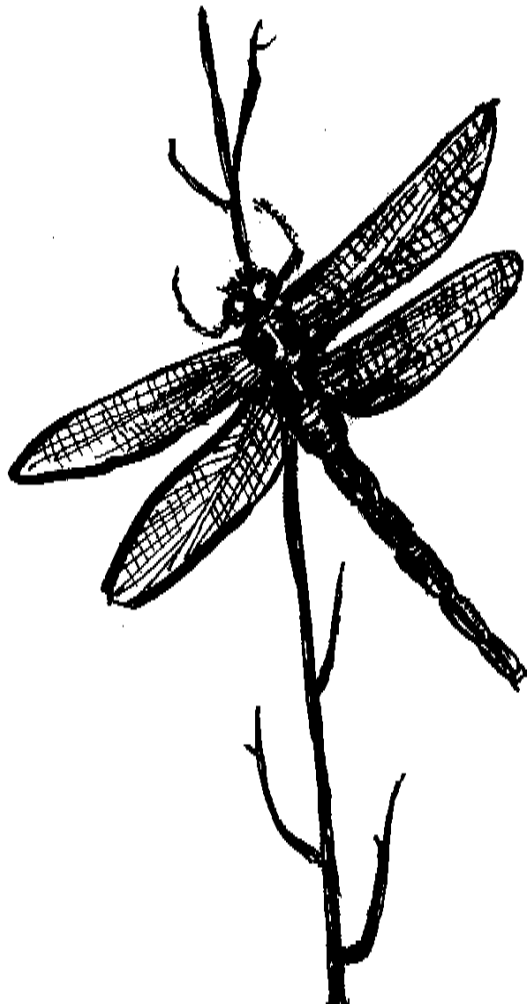

漱石

सोसएकि

पत्ते नहीं जानते
कौन-सा पत्ता पहले गिरेगा...
क्या हवा जानती है?

芭蕉

बा
शो

उड़ने की कोशिश में
फुदकती, चहकती, छोटी-सी चिड़िया
हाय, कितना काम है तुझे!

一茶 इस्सा

मेरे छोटे-से गाँव में
मक्खियाँ भी नहीं डरतीं
बड़े आदमी को काटने से।

一茶 इस्सा

चंचल टिड्डे
देखना... कहीं कुचल न देना
ओस के ये मोती।

अनाम

हाय, मैंने क्यों तोड़े
और क्यों नहीं तोड़े
वे नीले रंग के फूल!

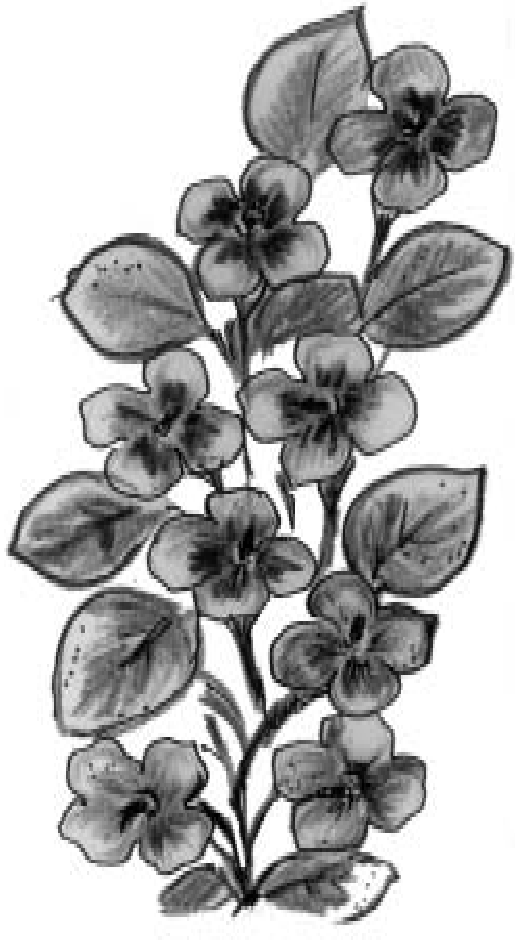

秋色

शूशिकि

सपने से उठकर भी
मैं रंग देखूँगा
आइरिस* के।

*एक किस्म के फूल

一茶 इस्सा

डरो मत, मकड़ियो
इतना साफ़ कहाँ रखता हूँ
मैं अपना घर!

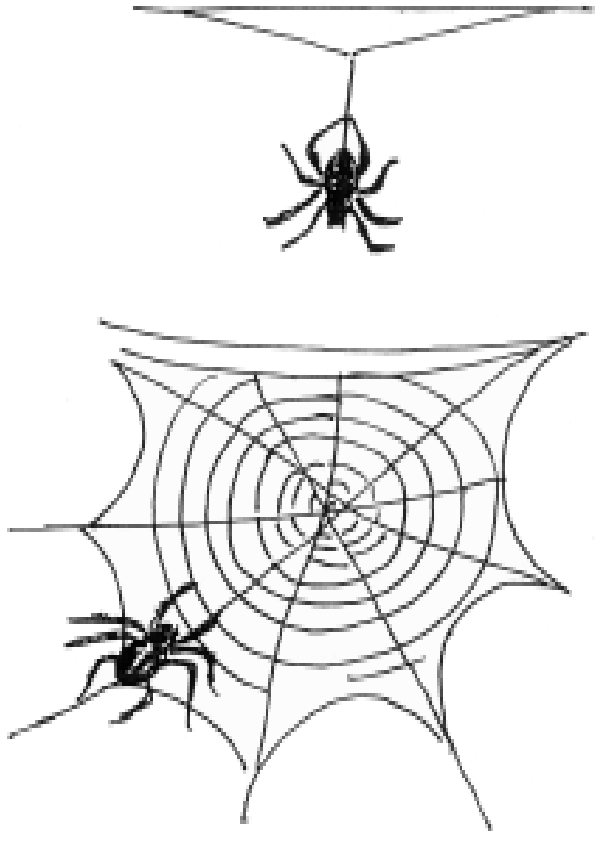

宗因

सोइन्

जीवन
एक तितली जैसा है
वह कुछ भी क्यों न हो।

也 या
有 यु

मूरख पुतले
तुम्हारे बाँस के पैरों तले
पक्षी दाना चुग रहे हैं।

芭蕉

बा
शो

मरता हुआ झींगुर..
कितना दम है
उसके गाने में।

漱石

सोसएकि

तितली, मेरी कूची से बने चित्र
फूल नहीं हैं
सिर्फ़ उनकी छाया है।

蕪村 बुसोन्

नदी किनारे के पेड़
क्या तेरे फूलों के अक्स
सच में बह जाते हैं?

इस संकलन में शामिल कवि

आराकिदा मोरिताके (1472-1549)
नोनोगुचि र्‌यूहो (1594-1669)
निशियामा सोइन् (1605-1682)
मात्सुओ बाशो (1644-1694)
ओचि एत्सुजिन् (1656-1702)
उएजिमा ओनित्सुरा (1661-1738)
ओगावा शूशिकि (1669-1725)
योकोइ यायु (1701-1783)
चियो-नि (1703-1775)
योसा बूसोन् (1716-1783)
कोबायाशी इस्सा (1763-1827)
मासाओका शिकि (1867-1902)
नात्सुमे सोसएकि (1867-1916)
शिसएइ जो
शुसएन्
और एक अनाम

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया कि जब बच्चों को स्कूली समय से बाहर, घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों, तो स्कूली शिक्षा भी सार्थक हो जाती है। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा *संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। एकलव्य ने शिक्षा, जनविज्ञान व बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ तथा सामग्री आदि भी विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, देवास, इन्दौर व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा हरदा, उज्जैन और परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।